Websites:
http://www.sciencepub.net
http://www.sciencepub.net/report

Emails:
editor@sciencepub.net
reportopinion@gmail.com

Report and Opinion

MARSLAND PRESS
Multidisciplinary Academic Journal Publisher

Nationalism of Swami Vivekananda: An Analytical Study

Dr. Jayveer Singh and Shivcharan Namdeo Dhande

*Associate Professor, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan (India)
**Research Scholar, Department of History, OPJS University, Churu, Rajasthan (India)
e-mail: shavicharandhande@gmail.com

Abstract: Vivekananda wanted Indians to be good human beings. They should be generous, kind, love others, ready to embrace everyone and behave with dignity. He chose Hinduism to inculcate these liberal and universal values in Indians. Hinduism at that time had to contend with the colonial power as well as the caste system and conservatism. It may seem that Vivekananda considered Hinduism superior to other religions. But his core message is one of inclusivity.What he used to talk about the basic unity of all religions can work as a salve in today's circumstances, when man has become the enemy of man. His India and his nationalism do not spread hatred towards others. His nationalism makes Indians better human beings. In today's India full of turmoil, bitterness and violence, Vivekananda's voice sounds like a voice of wisdom.

[Singh, J. and Dhande, S.N. **Nationalism of Swami Vivekananda: An Analytical Study**. *Rep Opinion* 2022;14(12):229-231]. ISSN 1553-9873 (print); ISSN 2375-7205 (online). http://www.sciencepub.net/report. 05. doi:10.7537/marsroj141222.05.

Keywords: Vivekananda's, Thoughts, Nationalism, India

स्वामी विवेकानन्द का राष्ट्रवादः एक विष्लेषणात्मक अध्ययन

सारांश: विवेकानंद चाहते थे कि भारतीय अच्छे मनुष्य बनें। वे उदार हों, दयालु हों, दूसरों से प्रेम करें, सभी को गले लगाने के लिए तैयार हों और उनका व्यवहार गरिमापूर्ण हो। उन्होंने भारतीयों में ये उदार और सार्वभौमिक मूल्य उत्पन्न करने के लिए हिन्दू धर्म को चुना। हिन्दू धर्म को उस समय औपनिवेशिक सत्ता के साथ-साथ जाति प्रथा और रूढ़िवादिता से भी जूझना था। ऐसा लग सकता है कि विवेकानंद हिन्दू धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ मानते थे। परंतु उनका मूल संदेश समावेशिता का है। सभी धर्मों की मूल एकता की जो बात वे करते थे, वह आज की परिस्थितियों में, जब मनुष्य मनुष्य का दुश्मन बन गया है, एक मरहम का काम कर सकती है। उनका भारत और उनका राष्ट्रवाद, दूसरों के प्रति घृणा नहीं फैलाता। उनका राष्ट्रवाद भारतीयों को बेहतर मनुष्य बनाता है। आज के उथल-पुथल, कटुता और हिंसा से भरे भारत में विवेकानंद की आवाज समझदारी की आवाज लगती है।

1.1 परिचय

विवेकानंद जी सच्चे महापुरुष थे। उनका कोई आलोचक नहीं हुआ। उन्होंने भारतीय संस्कृति की ध्वज पताका विश्व में फहराई। भारत के बारे में कहा जाता है कि ये अनेकता में एकता का देश है, यहां अलग खानपान, पहनावा अलग है। राष्ट्रीय युवा महोत्सव जैसे आयोजनों से ये अनेकता एकता में बदल जाती है। सरकार ने प्रयागराज कुम्भ का सफल आयोजन किया था। इसमें उत्तर प्रदेश की जनसंख्या से अधिक लोग सहभागी हुए थे। देश-विदेश से करीब पच्चीस करोड़ लोग संगम स्नान हेतु आये थे। अपने पूर्वजों, सांस्कृतिक परम्पराओं पर गौरव की अनिभूति होनी चाहिए। भारत राष्ट्र बनने की प्रक्रिया कभी नहीं रहा। यह शाश्वत रचना है।इसका उल्लेख विश्व के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में भी है। इसमें कहा गया कि भारत हमारी माता है हम सब इसके पुत्र है। राष्ट्र की उन्नति प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। जो लोग भारत को नही जानते वो लोग भारत के बारे में गलत बात षड्यंत्र करके भारत को नक्सलवाद, उग्रवाद आतंकवाद में धकेलने का प्रयास करते है। विष्णु पुराण में कहा गया कि यह भूभाग देवताओं के द्वारा रची गयी है।

विवेकानंद जी अपनी मातृभूमि के उत्थान के लिये जिस राष्ट्रवाद की कल्पना करते हैं, उसके मूल में मानवतावाद, आध्यात्मिक विकास और सांस्कृतिक नवजागरण है। इसे हासिल करने के लिये उन्होने वेदांतिक दर्शन को अपना उपकरण बनाया। विवेकानंद जी जिस भूमिका को समझने की बात करते थे, वह नए मनुष्य और नए समाज की भूमिका थी। करुणा, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और विश्वबंधुत्व पर आधारित आधुनिक शक्तिशाली भारत के निर्माण की भूमिका थी।

स्वामी विवेकानंद एंड मॉडर्नाइजेशन ऑफ हिन्दुज़्म' में हिलटुड रुस्टाव ने लिखा है कि, विवेकानंद एक ऐसा समाज चाहते थे, जहाँ बडे से बडा सत्य उद्घाटित हो सके और हर इंसान को देवत्व का अहसास हो। विवेकानंद सच को अपना देवता मानते थे और कहते थे कि पूरी दुनिया मेरा देश है। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता उनके लिये किसी संकीर्णता का नाम नही था।

ऐसे सात्विक और विश्व बंधुत्व की भावना वाले स्वामी विवेकानंद जी का नाम जैसे ही जहन में आता है, मन में उनके प्रति श्रद्धा की अनुभूति होती है। भारत के नैतिक मूल्यों को विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने वाले स्वामी विवेकानंद जी के राष्ट्रीय विचार हमारे अंदर देशप्रेम की भावना का संचार करते हैं। विदेशों में भारतीय संस्कृति की सुगंध फैलाने वाले स्वामी विवेकानंद जी को शत् शत् वंदन और नमन करते हुए उनकी कही बात, *'मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है'* को जीवन में अपनाने का संकल्प करते हैं।

1.2 स्वामी विवेकानंद और उनका मानववाद

आज जिस भारत में हम रह रहे हैं, उसमें धर्म और धार्मिक पहचान ने सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर लिया है और वे सार्वजनिक और नीतिगत निर्णयों को प्रभावित कर रहे हैं। **नागरिकता संशोधन विधेयक**, कुछ धर्मों को अन्य धर्मों पर प्राथमिकता देता है। **बलात्कार** और **अपहरण** जैसे अपराधों को भी धार्मिक रंग दिया जा रहा है। कुल मिलाकर, **धार्मिक पहचान**, देश के सार्वजनिक जीवन के केन्द्र में आ गई है। इसमें कोई परेशानी नहीं थी अगर धर्म, धार्मिक प्रतीकों और धार्मिक पहचान के नाम पर नफरत नहीं फैलाई जा रही होती। हो इसका उलट रहा है। कुछ धार्मिक समुदायों का बहिष्करण किया जा रहा है और नफरत से उपजे अपराध बढ़ रहे हैं। लगभग हर सामाजिक और राजनैतिक घटनाक्रम को धर्म और जाति के चश्मे से देखा जाता है। **राष्ट्रवाद** को भी **धर्म** से जोड़ दिया गया है।

आज के भारत में जिस राजनैतिक विचारधारा का वर्चस्व है, वह समाज के एक हिस्से को दूसरे दर्जे का नागरिक मानती है और प्रजातंत्र का क्षरण कर रही है। यह विचारधारा, श्रेष्ठता और प्रभुत्व की धारणा पर आधारित है। इस विचारधारा को अधिकांश भारतीयों के लिए स्वीकार्य बनाने और उसकी श्रेष्ठता का औचित्य सिद्ध करने के लिए, श्रेष्ठतावादी अक्सर अपने एजेंडे के अनुरूप, ऐतिहासिक व्यक्तित्वों, नायकों और दार्शनिकों को उद्धत करते हैं और उन पर कब्जा जमाने की कोशिश करते हैं। ऐसे ही एक व्यक्तित्व हैं स्वामी विवेकानंद। जिस समय हमारा देश बहुसंख्यकवाद की ओर बढ़ रहा है, तब स्वामी विवेकानंद के उदार विचारों को याद करना समीचीन होगा।

1.3 एक महान चिंतक और दार्शनिक थे स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद एक महान चिंतक और दार्शनिक थे। उनका जन्म 1863 में बंगाल में हुआ था। वे अद्वैत दर्शन के प्रतिपादक थे। उनके विचार जटिल थे और तत्समय की सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितियों पर आधारित थे।

तत्कालीन समाज, पतन की ओर अग्रसर था और तरह-तरह के अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ था। विवेकानंद इससे दुःखी और परेशान थे। अंग्रेज औपनिवेशिक शासन के कुप्रभावों से भी वे अनजान नहीं थे।

स्वामी विवेकानंद हिन्दू धर्म में सुधार लाना चाहते थे और हिन्दुओं में गर्व और आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न करना चाहते थे। हिन्दू धर्म एक ओर रूढ़िवादिता और दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा देश पर पश्चिमी विचार थोपे जाने से पीड़ित था। विवेकानंद का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के लिए संघर्ष को आध्यात्मिक आधार दिया और नैतिक व सामाजिक दृष्टि से हिन्दू समाज के उत्थान के लिए काम किया।

1.4 स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद और स्वामी विवेकानंद का भारत

विवेकानंद राष्ट्रवादी थे परंतु उनका राष्ट्रवाद, समावेशी और करूणामय था। जब भी वे देश के भ्रमण पर निकलते, वे घोर गरीबी, अज्ञानता और सामाजिक असमानताओं को देखकर दुःखी हो जाते थे। वे भारत के लोगों को एक नई ऊर्जा से भर देना चाहते थे। वे चाहते थे कि आध्यात्म, त्याग और सेवाभाव को राष्ट्रवाद का हिस्सा बनाया जाए। उन्होंने भारत के लिए एक आध्यात्मिक लक्ष्य निर्धारित किया था।

उन्होंने लिखा,

''हर राष्ट्र की एक नियति होती है, जिसको वह प्राप्त होता है। हर राष्ट्र के पास एक संदेश होता है, जो उसे पहुंचाना होता है। हर राष्ट्र का एक मिशन होता है, जिसे उसे हासिल करना होता है। हमें हमारी नस्ल का मिशन समझना होगा। उस नियति को समझना होगा, जिसे हमें पाना है। राष्ट्रों में हमारा क्या स्थान हो हमें वह समझना होगा और विभिन्न नस्लों के बीच सौहार्द बढ़ाने में हमारी भूमिका को जानना होगा।''

विवेकानंद का राष्ट्रवाद, मानवतावादी और सार्वभौमिक था। वह संकीर्ण या आक्रामक नहीं था। वह राष्ट्र को सौहार्द और शांति की ओर ले जाना चाहता था।

वे मानते थे कि केवल ब्रिटिश संसद द्वारा प्रस्ताव पारित कर देने से भारत स्वाधीन नहीं हो जाएगा। यह स्वाधीनता अर्थहीन होगी, अगर भारतीय उसकी कीमत नहीं समझेंगे और उसके लिए तैयार नहीं होंगे। भारत के लोगों को स्वाधीनता के लिए तैयार रहना होगा।

विवेकानंद 'मनुष्यों के निर्माण में विश्वास' रखते थे। इससे उनका आशय था शिक्षा के जरिए विद्यार्थियों में सनातन मूल्यों के प्रति आस्था पैदा करना। ये मूल्य एक मजबूत चरित्र वाले नागरिक और एक अच्छे मनुष्य की नींव बनते। ऐसा व्यक्ति अपनी और अपने देश की मुक्ति के लिए संघर्ष करता। विवेकानंद की मान्यता थी कि शिक्षा, आत्मनिर्भरता और वैश्विक बंधुत्व को बढ़ावा देने का जरिया होनी चाहिए।

अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि विवेकानंद, हिन्दू धर्म को अन्य धर्मों से श्रेष्ठ मानते थे।

विवेकानंद एक धर्मनिष्ठ हिन्दू थे और आध्यात्मिकता के रास्ते राष्ट्रवाद की ओर बढ़ने में विश्वास रखते थे। इसी का लाभ उठाकर, हिन्दू श्रेष्ठतावादियों ने विवेकानंद को अपनी विघटनकारी विचारधारा का 'पोस्टर बॉय' बना लिया है।

विवेकानंद के कुछ उद्धरणों को, उनके संदर्भ से अलग कर, वे अपने एजेंडे को औचित्यपूर्ण ठहराने का प्रयास कर रहे हैं।

वे विवेकानंद के स्मारक और उनके नाम पर संगठन बना रहे हैं। वे यह दावा कर रहे हैं कि वे विवेकानंद द्वारा दिखाई गई राह पर चलते हुए सेवा और राष्ट्रनिर्माण का काम कर रहे हैं। हिन्दू श्रेष्ठतावादी, विवेकानंद को हिन्दू राष्ट्रवाद का प्रखर प्रवक्ता, हिन्दू श्रेष्ठता का प्रतिपादक और इस्लाम व ईसाई धर्म से हिन्दू धर्म की रक्षा करने वाला बताते हैं। ये दावे एकदम झूठे हैं।

विवेकानंद न केवल यह स्वीकार करते हैं कि भारत में विभिन्न धर्मों का सहअस्तित्व है बल्कि वे यह भी कहते हैं कि ऐसा होना वांछित और उचित है।

1.5 शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद (Swami Vivekananda's address in the World Religious Parliament held in Chicago) को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा

''धार्मिक एकता का सांझा आधार क्या हो, इस पर बहुत कुछ कहा जा चुका है। इस संबंध में मैं अपना सिद्धांत प्रस्तुत करने नहीं जा रहा हूं। परंतु अगर यहां मौजूद लोगों में से कोई यह मानता है कि यह एकता किसी एक धर्म की जीत और अन्य धर्मों के विनाश से स्थापित होगी तो मैं उससे यही कहूंगा कि 'बंधु, तुम एक कभी न पूरी होने वाली आशा पाले बैठे हो'।

''न तो ईसाई को हिन्दू या बौद्ध बनने की जरूरत है और ना ही हिन्दू और बौद्ध को ईसाई बनने की। परंतु इन सभी को अन्य धर्मों की मूल आत्मा को आत्मसात करना होगा और इसके साथ-साथ, अपनी वैयक्तिता को भी सुरक्षित रखना होगा। अगर विश्व धर्म संसद ने दुनिया को कुछ दिखाया है तो वह यह है: इसने दुनिया को यह साबित किया है कि शुचिता, पवित्रता और परोपकार पर दुनिया के किसी चर्च का एकाधिकार नहीं है और हर धर्म ने उदात्त चरित्र वाले पुरूषों और महिलाओं को जन्म दिया है।

इस प्रमाण के बावजूद, यदि कोई यह सपना देखता है कि केवल उसका धर्म जिंदा रहेगा और अन्य धर्म नष्ट हो जाएंगे, तो मैं अपने दिल की गहराई से उस पर दया करता हूं। मैं उससे कहना चाहता हूं कि जल्दी ही विरोध के बावजूद, हर धर्म के झंडे पर यह लिखा होगा 'मदद करो, लड़ो मत', 'आत्मसात करो, विध्वंस न करो', 'सौहार्द और शांति न कि कलह और मतभेद'।''

इस तरह, वे यह मानते थे कि सभी धर्मों के नैतिक मूल्य एक से होते हैं। वे यह भी मानते थे कि एक-दूसरे से सीखकर सभी धर्म एक साथ आगे बढ़ सकते हैं।

वे यह भी मानते थे कि सभी धर्मों के अनुयायियों में उच्च चरित्र के अच्छे मनुष्य हैं। दूसरे शब्दों में, हर धर्म, अच्छे व्यक्तियो को जन्म देता है। यह संदेश हमारे आज के धार्मिक आधार पर ध्रुवीकृत समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

आज, धर्म विशेष के मानने वालों को निशाना बनाया जा रहा है। एक धर्म को दूसरे धर्म से नीचा बताया जा रहा है। धार्मिक प्रतीकों और कर्मकांडों में अंतर को बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा रहा है।

विवेकानंद कहते थे कि विभिन्न धर्मों के प्रतीक भले ही अलग-अलग हों परंतु उनका सार एक ही है। वे जोर देकर कहते थे कि विशेषकर हिन्दू धर्म ने इस विविधता को मान्यता दी है और इस यथार्थ को समझा है।

''विविधता में एकता, प्रकृति का नियम है और हिन्दू ने उसे जान लिया है। अन्य सभी धर्म कुछ विशेष रूढ़ियां प्रतिपादित करते हैं और समाज को उन्हें अपनाने पर मजबूर करते हैं। वे समाज के सामने एक कोट रखते हैं जो जैक, जॉन और हैनरी, तीनों को फिट आना चाहिए। अगर जॉन या हैनरी को कोट फिट नहीं आता तो उसे बिना कोट के ही रहना होगा। हिन्दुओं को यह अहसास है कि परम को पाने, उसके बारे में विचार करने या उसके बारे मे बताने के लिए सापेक्षता जरूरी है। और यह भी कि भगवानों की मूर्तियां, क्रास और अर्धचन्द्र, केवल प्रतीक हैं – वे ऐसे खूंटे हैं जिन पर आध्यात्मिक विचार टांगे जा सकते हैं।

''हिन्दू के लिए धर्मों की दुनिया एक ऐसी जगह है जहां महिला और पुरूष अलग-अलग परिस्थितियों से गुजरते हुए, एक ही लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। हर धर्म मनुष्य से ईश्वर का विकास करना चाहता है और वही ईश्वर धर्मों का प्रेरणास्त्रोत है। फिर इतने विरोधाभास क्यों हैं? हिन्दू के लिए ये केवल आभासी हैं। ये विरोधाभास इसलिए हैं क्योंकि वही सत्य अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग रूप ले लेता है।''

वे कहते हैं कि भारत का भविष्य, हिन्दू धर्म और इस्लाम के सौहार्दपूर्ण रिश्तों में ही निहित है। वे एक ऐसा भारत चाहते हैं जिसकी 'बुद्धि वेदांत और शरीर इस्लाम हो'

विवेकानंद सेवा करने की शिक्षा देते थे। गरीबों और दबे-कुचलों की सेवा उनके जीवन का लक्ष्य था। यही कारण है कि वे पहले हिन्दू मिशनरी कहे जाते हैं। उनका मूल संदेश यह था कि जाति, वर्ग या लिंग के भेद के बिना, सभी की सेवा की जाए। वे मानते थे कि हर मनुष्य में ईश्वर का वास है। दूसरों की सेवा करने से मानववाद मजबूत होता है। वे यह मानते थे कि गरीबों की सेवा किए बगैर राष्ट्र निर्माण नहीं हो सकता। वे मनुष्य की स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित प्रवृत्तियों के खिलाफ थे। वे सभी तरह के शोषण के विरोधी थे।

सन्दर्भ सूचि:

[1]. मेरी लुइवर्क- स्वामी विवेकानन्द इन अमेरिका, न्यू डिस्कवरीज कलकाता 1966, पृष्ठ 143

[2]. जैन प्रदीप कुमार, स्वामी विवेकानन्द और भारतीय समाज, विधामेद, विधा प्रकाशन मन्दिर लिमिटेड, प्रेस यूनिट, टी पी नगर, मेरठ, पृष्ठ 17-84

[3]. Bakshi SR, Sharma KC. (ed.) Encyclopedia of Indian Nationalism, Vista International Publishing House, New Delhi, 2007, 9.

[4]. Sarkar Sumit. Modern India 1885-1947, Mac MillanIndia Press, Madras, 1983.

[5]. Singh Birendra Kumar. Encyclopedia of IndianFreedom Fighters, Centrum Press, New Delhi, 2011, 8.

11/6/2022